# सत्य धर्म प्रवेशिका

# SATYA DHARMA PRAVESHIKA

(भाग ५)

''जो जीव, राग-द्वेषरूप परिणमित होने पर भी, मात्र शुद्धात्मा में (द्रव्यात्मा में=स्वभाव में) ही 'मैंपन' (एकत्व) करता है और उसी का अनुभव करता है, वही जीव सम्यग्दृष्टि है। यही सम्यग्दर्शन की विधि है।''

लेखक - C.A. जयेश मोहनलाल शेठ
(बोरीवली) B.Com., F.C.A.

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जिस ने सत्य धर्म समझ लिया वह हर हाल में ख़ुश रहेगा क्योंकि उसे पता है कि जो भी हो रहा है वह अच्छे के लिये ही हो रहा है।

One who understands the real dharma shall remain happy under any circumstances because one knows that whatever is happening, is for one's benefit.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

हम सोचते हैं कि धर्म बुढ़ापे में करेंगे लेकिन अपनी आयु कितनी है यह किसे पता है? इसलिये आज अपने जीवन का आख़िरी दिन है इस प्रकार से धर्म करना चाहिये।

One thinks that one shall practise dharma in one's old age. But no one knows how long one will live. Therefore, one must live each day as if it is the last day of one's life and practise dharma accordingly.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

प्रभावना करने के लिये पहले ख़ुद सत्य धर्म प्राप्त करना आवश्यक है। मात्र प्राध्यापक जैसे पढ़ाने से प्रभावना नहीं होती। उसके लिये वैज्ञानिक की तरह पहले अपने जीवन में सत्य धर्म का प्रयोग आवश्यक है।

It is necessary to first attain true dharma oneself before promulgating it. Merely lecturing on the principles of dharma like a professor does not result in effective promulgation. To impart true dharma, one has to first practise it oneself, like a scientist who has to first prove his theory before sharing it with others.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें स्वयं अनुशासन में रहना है परन्तु दूसरों पर अनुशासन नहीं थोपना है। दूसरों को हम केवल प्रोत्साहन दे सकते हैं और कुछ नहीं कर सकते।

We have to lead a disciplined life ourselves but not impose discipline on others. All we can do for others is to encourage them, nothing else.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें दूसरों की निन्दा नहीं करनी है बल्कि उनकी ग़लतियों से सीखना है। हमें उन ग़लतियों को दोहराना नहीं है। अगर ग़लती हो भी जाये तो माफ़ी माँगनी है और आगे ऐसी ग़लती न हो इसका ख़याल रखना है।

Instead of criticising others, we should learn from their mistakes. We should not repeat their mistakes. Even if we commit a mistake, we should apologise for it and take care that it is never repeated.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

पापानुबन्धी पुण्य से लोग पाप करते हुए भी पैसे तो कमा लेते हैं लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि उनका अनन्त भविष्य अन्धकारमय हो जाता है। यह अत्यन्त करुणाजनक बात है।

Those who have pāpānubandhī puṇya may earn money through unethical means but do not realise that by doing so, they have ensured an unending dark future for themselves. One can only feel sympathy for them.

Puṇya — virtue, merit, enabling power
Pāpa — sin, demerit, disabling power
Puṇyānubandhī Puṇya — Puṇya that enables one to do good deeds while enjoying Puṇya
Pāpānubandhī Puṇya — Puṇya that enables one to do bad deeds while enjoying Puṇya
Puṇyānubandhī Pāpa — Pāpa that results in good deeds while suffering Pāpa
Pāpānubandhī Pāpa — Pāpa that results in bad deeds while suffering Pāpa

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर हम प्रतिकूलता आने पर परेशान हुए तो अनन्त कर्मों का बन्ध होता है। अगर हम उस प्रतिकूलता को पाप का उदय मानकर स्वीकार लेते हैं तो वह प्रतिकूलता आधी रह जाती है। और जब हम यह समझ लेते हैं कि इस प्रतिकूलता से हमारे कर्मों की निर्जरा हो रही है तो वह कष्ट भी नहीं देती।

If we allow adversities to disturb us, we bind endless karmas. If we accept adversity as a result of the fruition of our pāpa, the adversity is halved. And when we realise that adversity helps shed karmas from the soul, the adversity stops causing us pain.

āsrava — inflow of karmas into the soul
bandha — bondage of karmas with the soul
saṃvara — stoppage of inflow of karmas in the soul
nirjarā — shedding of karmas from the soul

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम पद, प्रतिष्ठा और अनुकूलता के पीछे भागते हैं तब नियम से पाप बाँधते हैं जब कि अगर हमारे पुण्य पुख़्ता हैं तब वही पद, प्रतिष्ठा और अनुकूलता स्वयं घर चल कर आते हैं।

When we chase power, prestige and prosperity we are certain to bind pāpa karmas. However, if our puṇyas are strong, the very same power, prestige and prosperity shall come to us on their own.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे धर्म करने से आनन्द नहीं मिलता उसे यह समझना है कि वह धर्म के नाम पर जो कुछ भी कर रहा है वह सत्य धर्म नहीं है।

He who does not derive joy from practising dharma must understand that whatever he is doing in the name of dharma is not true dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

हम भीड़ से प्रभावित होकर धर्म चुनते हैं परन्तु सत्य धर्म भीड़ देखकर नहीं, परीक्षा करके अपनाया जाता है।

We are swayed by crowds and select dharma based on its popularity and acceptance. But true dharma cannot be selected on the basis of how many followers it commands. It should only be followed after examining it impartially.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

धर्मप्राप्ति तथा मोक्षप्राप्ति के लिये सम्यक् पुरुषार्थ के साथ धैर्य भी आवश्यक है।

To attain dharma (eternal truth) and mokṣa (eternal bliss), patience is as crucial as correct efforts.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

धर्मप्राप्ति के लिये पहले मान्यता का बदलाव, सबसे बड़ा बदलाव कहलाता है।

To attain dharma, change in one's belief system is the biggest change.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

बहस करने से सत्य धर्म की प्राप्ति असम्भव है। बहस तो वह करता है जिसे सीखना नहीं सिखाना हो।

True dharma cannot be attained by debating. Debates and arguments are for those who wish to teach rather than learn.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

भावना सहित धर्मक्रियाएँ कार्यकारी हैं। बिना भावना की धर्मक्रियाएँ मात्र धार्मिकता का दिखावा हैं। उनसे कोई लाभ नहीं।

Dharmic practices are effective when accompanied by the appropriate emotion and devotion. Without the right emotion, dharmic practices are merely a display of one's religiosity. They do not lead to any spiritual gains.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग धर्म की पढ़ाई करके भी डिग्री पाना चाहते हैं जब कि ऐसी कोई भी डिग्री मुक्ति दिलाने में असमर्थ है। मुक्ति चाहनेवालों का मुख्य प्रयोजन पढ़ाई या डिग्री नहीं बल्कि अपने जीवन में उस शिक्षा का प्रयोग होता है।

Even those who study dharma want a degree although no such a degree can get them liberation. Seekers of liberation study dharma in order to practise it in their lives, not for the sake of study or a degree.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

चाहे कितने भी उच्च आसन पर हों, अगर आत्मा को नहीं जाना तो अगले भव में पशु भी बने तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। और आगे निगोद तो निश्चित ही है।

Irrespective of the high position one enjoys, if one does not know one's soul, it would be no surprise if one is reborn as an animal in one's next life. In the future, one's descent into nigoda is certain if one does not know one's soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसने आत्मा के श्रद्धान मात्र से आनेवाला शान्त भाव चखा ही नहीं उसे तो बाह्य साधनों में ही सुख दिखता है। जिस दिन उसे अपने भीतर सुख दिखने लगे तो समझ लेना कि उसकी साधना शुरु हो गयी है।

One who has never even experienced the bliss of only faith that one is the soul and nothing else is bound to find pleasure in external factors. The day one discovers the bliss within, you can be certain that his spiritual upliftment has begun.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

लोभ पाप का बाप है। लोभी अन्धा होता है। वह न्याय-अन्याय का विचार नहीं करता।

Greed is the father of sin. One blinded by greed does not distinguish between justice and injustice.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग पुण्य का कारण मानकर दान देते हैं और उससे अपना मान पोषित करते हैं। मगर जब तक आत्मज्ञान नहीं होता तब तक दान प्राय: मान का कारण बनता है और उससे अपना ही नुक़सान होता है।

People consider charity as a cause of puṇya. They give to charity to appease their own egos. In the absence of self-realisation, charity often becomes a means of stroking the ego. If ego is the motivation, then even charity can harm the self.

Puṇya — merit

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग पाप करते हैं और मन में भाव पाप छिपाने का होता है। पाप को छिपाया तो जा सकता है पर उसका फल कैसे छिपेगा? पाप का फल कभी छिप नहीं सकता।

People sin and try to hide their sins. One may hide one's sins but what about the consequences thereof? The consequences of sin can never be hidden.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

अनादि काल से हमने दुनिया को साधने के ही प्रयत्न किये हैं लेकिन उनसे दुःख के अलावा आज तक कुछ भी हासिल नहीं हुआ। यदि सचमुच दुःख से मुक्ति चाहिये तो हमें अपने स्वरूप को साधना पड़ेगा।

Since beginningless time we have focused our efforts on conquering the external world. But those efforts have yielded nothing but grief. If we truly seek freedom from sorrow, we need to focus and conquer our svarūpa.

Svarūpa — our true self, the core of our being

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग समझते हैं कि हमें 'सम्यग्दर्शन की विधि' पुस्तक मिल गयी तो फिर गुरु की डाँट खाने की क्या आवश्यकता है? वे यह नहीं जानते कि सम्यग्दर्शन की योग्यता पाने के लिये गुरु की डाँट सबसे ज़रूरी औषधि है।

People think that once they have received the "Samyagdarśana ki Vidhi" book, they need not listen to the guru's admonishments. They do not know that censure by the guru is essential for the seeker to qualify for samyaktva.

Samyagdarśana/Samyaktva — enlightened perception, true insight

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

केवल आत्मा की लगन हो और आत्मा न मिले यह असम्भव है।

If you are completely focused on the soul and yet unable to realise it, that is not possible.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

विषयभोग जब तक अपनी आत्मा के लिये विष न लगें तब तक उनका त्याग ज़्यादा दिन नहीं टिकता।

Unless you are absolutely convinced that sensual desire is like poison for your soul, your renunciation will not last very long.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

वर्तमान परिणामों को सम्भालिये, वे ही आप के भविष्य को निर्धारित करते हैं।

Control your current response system because it determines your future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

अध्यात्ममार्ग में सबसे बड़ा रोड़ा घमण्ड है। गुरु के प्रति समर्पण भाव से घमण्ड नष्ट हो जाता है।

Arrogance is the greatest obstruction on the spiritual path. Arrogance is destroyed when you surrender to the guru.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

## इच्छा अध्यात्ममार्ग में बाधा है। इच्छा का फल निगोद है। यह समझने से इच्छा अपने आप दूर हो जायेगी।

Desire is an obstruction in the path of spirituality. Desire results in Nigoda. Once you realise this, your desire shall depart on its own.

The worldly soul is stuck in the cycle of birth and death. There are only two permanent abodes of the soul — Mokṣa and Nigoda

Mokṣa = liberation, the highest form of existence, the state of supreme and unending bliss

Nigoda = bondage, the lowest form of existence, the state of absolute gloom, intense sorrow and guaranteed endless pain and suffering
The soul that frees itself from desire attains Mokṣa. The soul that remains caught up in desire attains Nigoda.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

ज्ञानी को राग से राग नहीं होता क्योंकि उसे राग का फल पता है। इसके विपरीत अज्ञानी को राग कष्ट रूप नहीं लगता। वह तो रागरहित जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता।

The knower does not get attached to attachment because he knows the consequences of attachment. In stark contrast, the ignorant one does not realise that attachment is the cause of all sorrow. He cannot even imagine life without attachment.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

इन्द्रियभोग से कुछ काल के लिये तृप्ति अवश्य मिलती है परन्तु इन्हें भोगने से बार-बार भोगने की इच्छा अधिक प्रबल होती है। यह इच्छा पीड़ादायी है। इच्छा और भोग दोनों पापबन्ध के कारण हैं। वे हमें भविष्य में दु:ख देते हैं।

Sensual delectations bring fleeting pleasure. But they strengthen the desire for repeated indulgence. This desire results in sorrow. Both desire and indulgence lead to the bondage of pāpa, ensuring a sorrowful future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

सांसारिक सुख एक छलावा है। भोग तो सुख के नाम पर दुःख उत्पन्न करने के साधन बनते हैं। इनसे बचना नितान्त आवश्यक है।

Worldly happiness is an illusion. Under the guise of giving pleasure, sensual delectations are the means of creating more sorrow. It is vitally important to stay away from them.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जिन्हें तत्त्वजिज्ञासा हो उन्हें कोई रोक नहीं सकता। सत्यान्वेषी निडर होते हैं। परिस्थिति कैसी भी हो, वे निरन्तर तत्त्वचिन्तन करते रहते हैं।

Seekers of the truth are unstoppable by anyone. They are courageous. Irrespective of the circumstances, they constantly contemplate upon the ultimate Truth.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे आत्मा के बारे में सोचने का समय ही नहीं उसका भविष्य अन्धकारमय और पीड़ादायक है।

One who has no time to think of the soul has a dark and painful future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

हमारा बाहर में सुख ढूँढना ही हमारे अन्धकारमय भविष्य का संकेत देता है। सुख यदि बाह्य साधनों में होता, तो ज्ञानी अन्तर्मुख क्यों होते?

The fact that we seek happiness in external factors indicates our empty future. If true happiness could be found in external factors, why would the wise ones look inward?

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

हम भौतिक उपलब्धियों में सुख की कल्पना करते हैं और उसी ओर दौड़ते हैं। इससे हमें दु:ख के अलावा कुछ नहीं मिलता। इच्छा के अभाव से ही हम सच्चा सुख पाने लायक बनते हैं।

We imagine that happiness lies in worldly accomplishments and chase them. All we gain out of this is sorrow. Only the absence of desire prepares us for attaining true bliss.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

अनैतिक आचरण द्वारा हम स्वयं ही अपना भविष्य अन्धकारमय और पीड़ादायक बना लेते हैं।

By indulging in unethical conduct, we ensure for ourselves a future of darkness and pain.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें इस जीवन में जो समय और शक्ति मिले हैं उनका सही उपयोग करके अपने आप को इस जन्म-जरा-मृत्यु के चक्कर से मुक्त करना है, उस चक्कर को बढ़ाने में नहीं लगना है।

Whatever time and energy we possess, should be used appropriately to free ourselves from the cycle of birth, old age and death. Our time and energy should not be used to extend the cycle of transmigration!

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जब तक हमें परद्रव्य सुख का कारण लगता है तब तक हम सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर पायेंगे। सच्चा सुख हमारे भीतर है, हमें उसे खोजना है और उसी में ठहरना है।

Till the time we continue to believe that external factors are the cause of happiness, we shall never find true bliss. True bliss lies within us. We have to find it and remain immersed in it.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जब तक हम धनवानों के पीछे लगे रहेंगे तब तक यह समझना कि हमें पुण्य से धन की प्राप्ति होती है न कि किसी धनवान के पीछे भागने से, यह बात समझ में नहीं आयी है। इससे पता चलता है कि हमें प्रभु के कथन पर विश्वास नहीं है अर्थात् प्रभु पर विश्वास नहीं है।

As long as one keeps running after the rich in order to gain wealth, it is evident that one has not understood the fact that money comes through puṇya, not through chasing the rich. This indicates that we do not have faith in God's teachings. Meaning, we do not have faith in God.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मानुभव सरल है लेकिन जिसे संसार अच्छा लगता हो,
उसके लिये अत्यन्त कठिन हैं।

Self-realisation is easy. But extremely difficult for those who love the external world.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

इस संसार में मुफ़्त में कुछ नहीं मिलता। धनप्राप्ति पुण्य के उदय से ही होती है न कि धनिकों के पीछे भागने से। इससे यह नहीं समझना कि हमें लाभ करानेवाले उपकारी नहीं हैं। वे अवश्य उपकारी हैं परन्तु हमारे पुण्योदय के अभाव में वे कुछ नहीं कर सकते।

In this world, you do not get something for nothing. Wealth is earned only due to your puṇya (meritorious deeds) not by running after the rich. From this, don't misunderstand that those who have helped us are not our benefactors. They most certainly are. But even they cannot do anything in the absence of our puṇya.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे इस बात का यक़ीन नहीं कि सच्चा सुख आत्मा के अलावा कहीं नहीं है, वही बाह्य सुखों की कल्पना कर उनके पीछे भागता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं हो सकता क्योंकि उसका नरक - निगोद में अनन्त काल के लिये जाना निश्चित है।

One who is not firmly convinced that true bliss lies only in the soul (the transcendental self) imagines the existence of worldly pleasures and runs after them. Such a person can never find bliss because he is certain to end up in hell - nigoda.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

मायाचार तिर्यंचगति का कारण है। मायाचार करने पर अन्य किसी को पता चले या न चले, अनन्तानुबन्धी माया का बन्ध अवश्य होता है।

Deceit causes rebirth as a sub-human. When we indulge in deceit, others may or may not come to know of it. But we certainly bind Anantānubandhī karmas that cause rebirth as a sub-human.

Anantānubandhī refers to bondage of karma for infinite worldly lives. It is the most severe degree of bondage of karma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जिन्हें भोग भोगने के भाव हैं वे पाप के बन्धक हैं। पुण्य के उदय से भोग तो बिना माँगे ही मिल जाते हैं। भोग की माँग जीव को सम्यग्दर्शन से दूर ही रखती है।

Those who desire sensual pleasures are binding pāpa. In the presence of puṇya, pleasures appear automatically, without having to ask for them. The desire for sensual pleasure keeps samyagdarśana away.

Pāpa = demerits
puṇya = merits
Samyagdarśana = enlightened perception/true insight

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

यदि हमें अपना कल्याण करना है तो हमें अपने परिणामों को धर्म के अनुसार बदलना होगा, न कि औरों के।

If we seek emancipation, we shall have to bring our own innate disposition in line with dharma, not others'.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

इच्छा ही संसार का कारण है। इच्छापूर्ति सुख तो देती नहीं बल्कि अनन्त इच्छाओं के रूप में अनन्त दुःख ले आती है।

Desire is the engine of saṃsāra. Even the fulfilment of desire does not lead to happiness. It gives rise to an endless yearning for more fulfillments, thus attracting endless sorrow.

saṃsāra — worldly journey, the cycle of birth and death

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें यह तो पता नहीं कि हम किस पल इस भव से विदा ले लेंगे। फिर भी यह जीव मौज मनाने की सोच रहा है। यह मूर्खता नहीं तो क्या है?

We do not know which moment we shall depart from this world. Despite that, we are focussed on external pleasures. What is this if not foolishness?

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे पाप छोड़ने योग्य लगता ही नहीं उसका मोक्षमार्ग में प्रवेश असम्भव है।

He who does not consider pāpa worth giving up can never walk on the path of liberation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

शरीर के प्रति ममत्व यानी शरीर को "मैं" मानना सबसे बड़ा पाप है, इसी का नाम मिथ्यात्व है।

Attachment with the body and identifying with it is the greatest pāpa. This is called mithyātva.

Pāpa = demerit, sin
Mithyātva = false belief

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

## अनादि के विपरीत संस्कारों का फल है मिथ्यात्व।

Mithyātva is the consequence of false mental conditioning since beginningless time.

Mithyātva = false belief

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

# सत्य धर्म प्रवेशिका

## मुझे क्या रुचता है? वही मेरी योग्यता का प्रमाण है।

My likes and dislikes are the most clear evidence of my growth (mental, spiritual and emotional).

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

**मैत्री भावना** – सर्व जीवों के प्रति मैत्री चिन्तवन करना, मेरा कोई दुश्मन ही नहीं ऐसा चिन्तवन करना, सर्व जीवों का हित चाहना।

**प्रमोद भावना** – उपकारी तथा गुणी जीवों के प्रति, गुण के प्रति, वीतरागधर्म के प्रति प्रमोदभाव लाना।

**करुणा भावना** – अधर्मी जीवों के प्रति, विपरीत धर्मी जीवों के प्रति, अनार्य जीवों के प्रति करुणाभाव रखना।

**मध्यस्थ भावना** – विरोधियों के प्रति मध्यस्थभाव रखना।

**– मुखपृष्ठ की समझ –**

अपने जीवन में सम्यग्दर्शन का सूर्योदय हो और उसके फलरूप अव्याबाध सुखस्वरूप सिद्ध अवस्था की प्राप्ति हो, यही भावना।